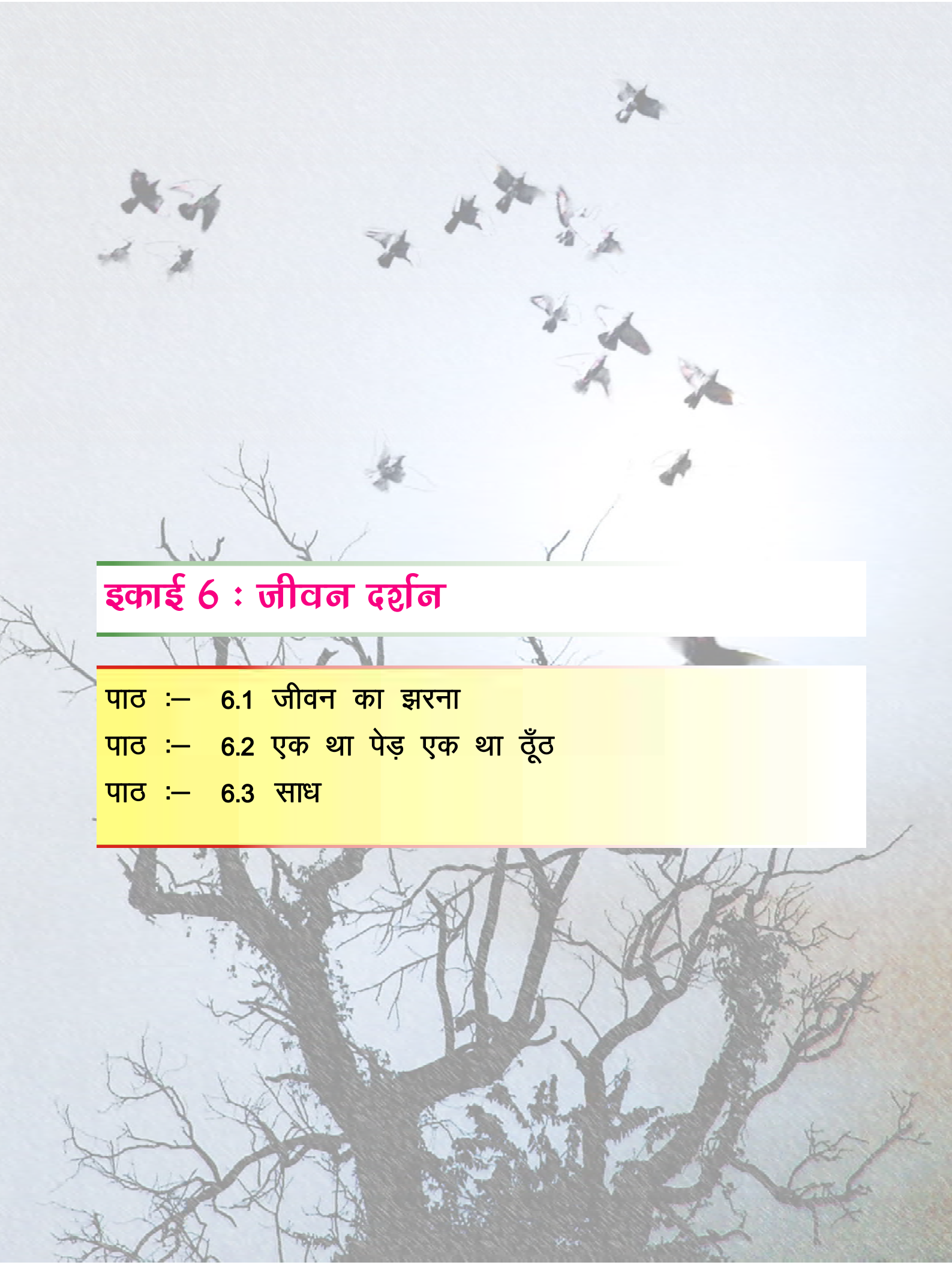

इकाई 6 : जीवन दर्शन

पाठ :– 6.1 जीवन का झरना

पाठ :– 6.2 एक था पेड़ एक था ठूँठ

पाठ :– 6.3 साध

इ
का
ई

6 जीवन–दर्शन

इस इकाई को पुस्तक में शामिल करने के पीछे यह उद्देश्य रहा है कि विद्यार्थी पुस्तक के इस खंड की विधाओं के माध्यम से जीवन के आंतरिक पक्ष के प्रति अपनी उत्सुकता या कौतुहल के सूक्ष्म तन्तुओं को पकड़ सकें। उस पर अपने भाव, विचार को सजगता व संवेदनशीलता के साथ प्रकृति में उपलब्ध अनुभवों को महसूस करते हुए रख सकें। इस खंड में शामिल रचनाएँ विद्यार्थियों की झीनी अनुभूतियों व भाषिक संवेदनाओं को प्रखर बनाने में सहायक होंगी साथ ही कल्पना तत्व और सौंदर्य के पहलुओं को समझ कर भावों को अभिव्यक्त करने वाली भाषिक प्रयोग के बारे में समझ बना पाएंगे।

आरसी प्रसाद सिंह की रचना "जीवन का झरना" जीवन में सुख–दुख का सामना करते हुए भी अनवरत आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है। जीने के वास्तविक मर्म को समझते हुए सकारात्मकता के साथ जीवन पथ में आने वाली हर बाधाओं का सामना करने की सीख देती है। गतिशीलता को अपने जीवन पथ के ध्येय के रूप में रखती यह कविता जीवन को जड़ता से जीवन्तता की ओर उन्मुख करने के लिए प्रेरित करती है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "साध" में शांति प्रिय जीवन की मधुर कल्पना की गई है। नदी के नीरव प्रवाह से जीवन की तुलना करते हुए कवयित्री ने संतोषप्रद जीवन अपनाने का आह्वान किया है। कवयित्री की चाहत है कि मानव जीवन नदी के शांत प्रवाह–सा हो और उसमें हर आनेवाले पल में नवीनता का एहसास हो। जीवन की यह उर्वरता हमारे जीवन अनुभवों और अनुभूतियों को अनुगूँजित करते हुए संगीतमय बनाती है।

कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर का निबंध "एक था पेड़ एक था ठूँठ" में मनुष्य के स्वभाव की तुलना बाँझ के हरे–भरे पेड़ ओर ठूँठ से की है। ठूँठ को निर्जीव जड़ता और विनाश का प्रतीक बताते हुए लेखक कहते है कि जीवन में जो व्यक्ति बिना सोचे समझे परम्परागत आदर्शों और सिद्धान्तो पर अड़े रहते हैं वास्तव में उनका जीवन निरर्थक होता है। बाँझ का हरा–भरा पेड़ जो हवा के झोकों के साथ हिलता–डुलता रहता है पर उसकी जड़ उसे मजबूती से थामे रहती है। मनुष्य के विचार भी बाँझ के पेड़ की तरह होने चाहिए लचीलें और परिस्थितियों के साथ समन्वय साधने वाले। परन्तु हमारे निर्णयों में दृढ़ता हो, जीवन्तता हो, विषम परिस्थितियों में भी जड़ों के समान डटे रहने की शक्ति होनी चाहिए। इस तरह इस पाठ के माध्यम से लेखक व्यक्ति के विचारों की दृढ़ता और लचीलेपन के बारे में बातचीत करते हैं और जीवन व्यवहार के सत्य को बखूबी स्पष्ट करते हैं।

पाठ – 6.1

जीवन का झरना

आरसी प्रसाद सिंह

जीवन परिचय

प्रसिद्ध कवि, कथाकार और एकांकीकार आरसी प्रसाद सिंह को जीवन और यौवन का कवि कहा जाता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को बालकाव्य, कथाकाव्य, महाकाव्य, गीतकाव्य, रेडियो रूपक एवं कहानियों समेत कई रचनाएँ दी हैं। इनके प्रमुख कविता संग्रहों में आजकल, कलापी, संचयिता, आरसी, जीवन और यौवन, मैं किस देश में हूँ : प्रेम गीत, खोटा सिक्का, आदि हैं। सहज प्रवाह और भाव के अनुरूप भाषा के कारण इनकी रचनाओं को पढ़ना हमेशा ही दिलचस्प रहता है।

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख दुःख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन सिर्फ़ एक है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर में गति है, जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन गिन।
निर्झर कहता है – बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है – बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।
चलना है केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।

शब्दार्थ :–

निर्झर – झरना; **यौवन** – जवानी; **तट–तीर** – किनारा; **मस्ती** – आनंद; **मदमाता** – मद में चूर; **गिरि** – पर्वत; **दुर्दिन** – बुरे दिन; **घड़ी** – 24 मिनट का कालखंड।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ने जीवन की समानता, झरने से किन–किन रूपों में की है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. कविता में आई पंक्ति 'सुख–दुःख' के दोनों तीरों से' कवि का क्या आशय है? मानव जीवन में इनका महत्व क्या है ?
3. संपूर्ण कविता में 'झरना' मानव जीवन के विभिन्न भावबोधों से जुड़ता है, कैसे? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. 'बाधा के रोड़ों से लड़ता' उक्त पंक्ति का आशय, जीवन को कैसे और कब–कब प्रभावित तथा प्रेरित करता है? अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'जीवन का झरना' कविता में मानव का मृत हो जाना क्यों और कब बताया गया है?
6. कविता की उन पंक्तियों को लिखिए जो मानव मन को संघर्ष के लिए प्रेरित करती हैं?

पाठ से आगे

3VUL37

1. उपर्युक्त कविता मन में आशा का संचार करती है और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। हमारे परिवेश की बहुत सी घटनाएँ हमारे मन में इसी प्रकार के भावों को जगाती हैं, उनका संकलन कर उन पर चर्चा कीजिए।

2. उपर्युक्त कविता में निर्झर, यौवन आदि प्रतीकों के द्वारा सदैव गतिशील रहने का संदेश दिया गया है। कविता से उन प्रतीकों का चुनाव कीजिए जो इसके विपरीत भाव को प्रकट करते हैं।

3. सुख और दुःख के मनोभावों से बँधा हुआ जीवन आगे बढ़ता है, हमारे परिवेश में इन भावों की अनुभूति हमें होती है। ये भाव हमारे व्यक्तित्व के विकास को कैसे प्रभावित करते हैं? अपने विचारों को तर्क सहित रखिए।

4. कविता में यह साफ झलकता है कि झरना पहाड़ के अंतर (भीतर/अंदर) से फूट कर विभिन्न बाधाओं से लड़ते हुए आगे बढ़ता है। मानव जीवन भी ऐसा ही होता है या इससे अलग? अपने विचार तर्क सहित रखिए।

भाषा के बारे में

3H4H4U

1. निर्झर, गिरि, तीर, अंचल आदि शब्द कविता में प्रयुक्त हुए हैं जो मूलतः संस्कृत भाषा से सीधे–सीधे प्रयोग में आ गए हैं, पाठ में आए इस प्रकार के कुछ और शब्दों को ढूँढ़ कर उनसे वाक्य बनाइए।

2. **निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।**

   धुन सिर्फ़ एक है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

   कविता की इन पंक्तियों में निर्झर का मानवीकरण किया गया है। प्रकृति के उपकरणों में मानवीय चेतना का आरोपण मानवीकरण की पहचान है, जैसे–निर्झर में गति, यौवन, उसका आगे बढ़ना, मस्ती में गाना। हिन्दी साहित्य में इसे एक अलंकार माना गया है। मानवीकरण अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण अन्य कविताओं से ढूँढ कर लिखिए।

3. कविता में आए इन शब्दों का प्रयोग करते हुए आप भी एक कविता लिखिए – यौवन, मदमाता, कूल–किनारा, जीवन, गिरि, पर्वत, भूतल, गति, करुणा, मस्ती, मानव, झरना, पछताना, अंचल, बहना आदि।

योग्यता विस्तार

1. प्रकृति के द्वारा मानव जीवन के विविध भावों को अभिव्यक्त करने वाली कविताओं को खोज कर पढ़िए और साथियों से चर्चा कीजिए।

2. जीवन में आशावादी भावों का संचार करने वाली अन्य कविताएँ खोजिए और अपने शिक्षक तथा मित्रों से चर्चा कीजिए।

3HDD6H

●●●

पाठ – 6.2

एक था पेड़ और एक था ठूँठ

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

जीवन परिचय

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर हिन्दी के जाने–माने निबंधकार हैं। इन्होंने राजनैतिक और सामाजिक जीवन से संबंध रखने वाले कई निबंध लिखे हैं। इन्होंने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया, जिसके कारण कई बार इन्हें जेल भी जाना पड़ा। वस्तुतः साहित्य के माध्यम से प्रभाकर जी गुणों की खेती करना चाहते थे और अपनी पुस्तकों को शिक्षा के खेत मानते थे जिनमें जीवन का पाठ्यक्रम था। वे अपने निबंधों को विचार यात्रा मानते थे और कहा करते थे– 'इनमें प्रचार की हुंकार नहीं, सच्चे मित्र की पुकार है, जो पाठक का कंधा थपथपाकर उसे चिंतन की राह पर ले जाती है।'

उनका मुख्य कार्यक्षेत्र पत्रकारिता था। ये 'ज्ञानोदय' के संपादक भी रहे। इनकी प्रमुख रचनाएँ – 'जिंदगी मुसकाई', 'माटी हो गई सोना', 'दीप जले शंख बजे' आदि।

जिस मकान में मैं ठहरा, उसकी खिड़की के सामने ही खड़ा था एक पूरा, पनपा बाँझ का पहाड़ी पेड़। पलंग पर लेटे–लेटे वह यों दिखता कि जैसे कुशल–समाचार पूछने को आया कोई मेरा ही मित्र हो।

एक दिन उसे देखते–देखते इस बात पर मेरा ध्यान गया कि यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा–का–पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा हो और उसका ऊपर का हिस्सा, हवा जब और तेज़ हो जाती है तो काफ़ी झुक जाता है, पर हवा के धीमे पड़ते ही वह फिर सीधा हो जाता है।

हवा मौज में थी, अपने झोंकों में झूम रही थी, इसलिए बराबर यह क्रिया होती रही और मैं उसे देखता रहा। देखता क्या रहा, उसकी झुक–झूम में रस लेता रहा। पड़े–पड़े वह पेड़ पूरा न दिखता था, इसलिए मैं पलंग से खिड़की पर आ बैठा। अब मुझे वह पेड़ जड़ से फुंगल तक दिखाई देने लगा और मेरा ध्यान इस बात की ओर था कि हवा कितनी भी तेज़ हो, पेड़ की जड़ स्थिर रहती है – हिलती नहीं है।

यहीं बैठे, मेरा ध्यान एक दूसरे पेड़ पर गया, जो इस पेड़ से काफी निचाई में था। पेड़ का ठूँठ सूखा वृक्ष और सूखा वृक्ष माने निर्जीव–मुरदा वृक्ष। सोचा, यह वृक्ष का कंकाल है, जैसा एक दिन सभी को होना है। अब मैं कभी इस हरे–भरे पेड़ की ओर देखता, कभी उस सूखे ठूँठ की तरफ। यों ही देखते–भालते मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि वह धीमे चले या वेग से यह ठूँठ न हिलता है, न झुकता है।

न हिलना, न झुकना; मन में यह दो शब्द आए और मैंने आप ही आप इन्हें अपने में दोहराया– न हिलना, न झुकना।

दूर अंतर में कुछ स्पर्श हुआ, पर वह स्पर्श सूक्ष्म था, यों ही संकेत सा। शब्द चक्कर काटते रहे, न हिलना, न झुकना और तब आया वह वाक्य–न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का, दृढ़ता का चिह्न है और वह वीर पुरुष है, जो न हिलता है, न झुकता है।

तभी मैंने फिर देखा उस ठूँठ की ओर। वह न हिल रहा था, न झुक रहा था। मन में अचानक प्रश्न आया– न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न है, पर उस ठूँठ में जीवन कहाँ है? यह तो मुरदा पेड़ है।

अब मेरे सामने एक विचित्र दृश्य था कि जो जीवित था, वह हिल रहा था, और जो मृतक था वह न हिल रहा था, न झुक रहा था। तो न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न हुआ या मृत्यु की जड़ता का?

अजीब उलझन थी, पर समाधान क्या था? मैं दोनों को देख रहा था, देखता रहा और तब मेरे मन में आया कि जो परिस्थितियों के अनुसार हिलता, झुकता नहीं, वह वीर नहीं, जड़ है; क्योंकि हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है।

हिलना और झुकना; अर्थात् परिस्थितियों से समझौता। जिस जीवन में समझौता नहीं, समन्वय नहीं, सामंजस्य नहीं, वह जीवन कहाँ है? वह तो जीवन की जड़ता है; जैसे यह ठूँठ और जैसे यह पहाड़ का शिखर।

मुझे ध्यान आया कि जीते–जागते जीवन में भी एक ऐसी मनोदशा आती है, जब मनुष्य हिलने और झुकने से इनकार कर देता है। अतीत में रावण और हिरण्यकश्यप इस दशा के प्रतीक थे तो इस युग में हिटलर और स्टॉलिन, जो केवल एक ही मत को सही मानते रहे और वह स्वयं उनका मत था। आज की भाषा में इसी का नाम है डिक्टेटरी, अधिनायकता।

विश्व की भाषा – दे, ले।

विश्व की जीवन–प्रणाली है – कह, सुन।

विश्व की यात्रा का पथ है – मान, मना।

इन तीनों का समन्वय है – हिलना–झुकना और समझौता–समन्वय।

जिसमें यह नहीं है, वह जड़ है, भले ही वह ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह जिद्दी।

मेरी खिड़की के सामने खड़ा हिल रहा था बाँझ का विशाल पेड़ और दूर दिख रहा था वह ठूँठ। समय की बात; तभी पास के घर से निकला एक मनुष्य और वह अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उस ठूँठ की एक छोटी टहनी काटने लगा। सामने ही दिख रही थी–सड़क, जिस पर अपनी कुदाल से काम कर रहे थे कुछ मजदूर।

कुल्हाड़ी और कुदाल; कुदाल और कुल्हाड़ी– मैने बार–बार इन शब्दों को दोहराया और तब आया मेरे मन में यह वाक्य–विश्व की भाषा है, दे, ले; विश्व की जीवन प्रणाली है कह, सुन; विश्व की यात्रा का पथ है– मान, मना; अर्थात् हिल भी और झुक भी, पर जो इन्हें भूलकर जड़ हो जाता है, वह ठूँठ हो, पर्वत का शिखर हो, अहंकारी मानव हो, विश्व उससे जिस भाषा में बात करता है उसी के प्रतिनिधि हैं ये कुल्हाड़ी–कुदाल।

साफ–साफ यों कि जीवन में दो भी, लो भी, कहो भी, सुनो भी, मानो भी, मनाओ भी; और यह सब नहीं, तो तैयार रहो कि तुम काट डाले जाओ, खोद डाले जाओ, पीस डाले जाओ।

मैं खिड़की से उठकर अपने पलंग पर आ पड़ा। बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था, झूम रहा था, पर तभी मेरे मन में उठा एक प्रश्न– तो क्या जीवन की चरितार्थता बस यही है कि जीवन में हवा का झोंका आया और हम हिल गए? जीवन में संघर्ष का झटका आया और हम झुक गए? साफ–साफ यों कि यहाँ – वहाँ हिलते–झुकते रहना ही महत्वपूर्ण है और जीवन की स्थिरता–दृढ़ता, जीवन के नकली सत्य ही हैं ?

प्रश्न क्या है, कम्बख्त बिजली की तेज़ शॉक है यह, जो यों धकियाता है कि एक बार तो जड़ से ऊपर तक सब पाया संजोया अस्त व्यस्त हो उठे। सोचा– नहीं जी, यह हिलना और झुकना जीवन की कृतार्थता नहीं, अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि विवशता है। जीवन की वास्तविक कृतार्थता तो न हिलना, न झुकना ही है यानी दृढ़ रहना ही है।

मैं अपने पलंग पर पड़ा देखता रहा कि बाँझ का पेड़ झुक रहा है, झूम रहा है, हिल रहा है, और दूर पर खड़ा ठूँठ न हिलता है, न झुकता है। जीवन है वृक्ष में, जो जीवन की कृतार्थता–दृढ़ता से हीन है और वह दृढ़ता है ठूँठ में, जो जीवन से हीन है; अजीब उलझन है यह।

तभी हवा का एक तेज झोंका आया और बाँस हिल उठा। मेरी दृष्टि उसकी झूमती देह यष्टि के साथ रपटी –रपटती उसकी जड़ तक चली गई और तब मैंने फिर देखा कि हवा का झोंका आता है तो टहनियाँ हिलती हैं; तना भी झूमता है पर अपनी जगह जमी रहती है उसकी जड़। हवा का झोंका हल्का हो या तेज, वह न झुकती है न झूमती है।

अब स्थिति यह कि कभी मैं देख रहा हूँ स्थिर जड़ को और कभी हिलते–झूमते ऊपरी भाग को। लग रहा है कि कोई बात मन में उठ रही है और वह उलझन को सुलझाने वाली है, पर वह बात क्या है ? बात मन की तह से ऊपर आ रही है – ऊपर आ गई है।

बात यह है कि हमारा जीवन भी इस वृक्ष की तरह होना चाहिए कि उसका कुछ भाग हिलने झुकने वाला हो और कुछ भाग स्थिर रहने वाला, यह जीवन की पूर्ण कृतार्थता है।

बात अपने में पूर्ण है, पर जरा स्पष्टता चाहती है और वह स्पष्टता यह है कि हम जीवन के विस्तृत व्यवहार में हिलते–झुकते रहें, समन्वयवादी रहें, पर सत्य के सिद्धांत के प्रश्न पर हम स्थिर रहें, दृढ़ रहें और टूट भले ही जाएँ, पर हिलें नहीं, समझौता करें नहीं।

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना–झुकना नहीं है और देह को निरंतर–हिलना झुकना ही है, नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है– न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे

समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने–बैठने–लेटने में मदद देने की भी।

संक्षेप में जीवन की कृतार्थता यह है कि वह दृढ़ हो, पर अड़ियल न हो।

दृढ़, जो औचित्य के लिए, सत्य के लिए टूट जाता है, वह हिलता और झुकता नहीं।

अड़ियल जो औचित्य और अनौचित्य, समय–असमय का विचार किए बिना ही अड़ जाता है और टूट तो जाता है, पर हिलता झुकता नहीं।

दो टूक बात यों कि जीवन वह है जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी सकता है पर ठूँठ वह है, जो अड़ ही सकता है, झुक नहीं सकता।

एक है जीवंत दृढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता।

हम दृढ़ हों, जड़ नहीं।

मैंने देखा, बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था और ठूँठ अनझुका अनहिला, ज्यों का त्यों खड़ा था।

शब्दार्थ :–

चरितार्थ – घटित होना; **कृतार्थ** – किसी पर उपकार करना; **देहयष्टि** – शारीरिक सौष्ठव; **रपटी–रपटती** फिसली – फिसलती हुई, अड़ियल; **औचित्य** – जो उचित हो ठीक हो; **जीवंत** – जीवन युक्त; **पनपा** – कोंपल फूटना, नए पत्ते निकलना; **फुंगल** – फुनगी; **ठूँठ** – सूखा पेड़; **जड़ता** – स्थिरता, जिसमें कोई हरकत न हो; **समाधान** – हल; **समन्वय** – विरोधी चीजों को मिलाना दोनों में तालमेल बिठाना।

पाठ से

1. बाँझ के हरे–भरे पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
2. हमारे विचार लचीले और समन्वयवादी क्यों होने चाहिए? स्पष्ट कीजिए।
3. बाँझ के हरे भरे पेड़ और ठूँठ किस मानवीय भाव को प्रकट करते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. दृढ़ता और जड़ता में फर्क को पाठ में किस प्रकार से बताया गया है? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
5. 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' पाठ के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. पाठ में जिस प्रकार के मानव स्वभाव का वर्णन किया गया है, उसी प्रकार के लोग समाज में भी दिखाई पड़ते हैं। उनका प्रभाव लोगों पर कैसे पड़ता है? इस पर आपस में चर्चा कीजिए।

2. आज की परिस्थितियों में एक आदर्श व्यक्ति के जीवन की विशेषताएँ क्या–क्या हो सकती हैं? इस पर समाज के विभिन्न आयु वर्ग के लोगों से वार्ता कर इस विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए।

3. अपने शिक्षक की सहायता से हिटलर, स्टालिन, रावण, हिरण्यकश्यप, डिक्टेटर आदि पर चर्चा के लिए प्रश्नों की सूची बनाइए।

4. तानाशाही क्या है? तानाशाह की जीवन शैली कैसी होती है? अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा के बारे में

1. सामने **ही** सड़क दिख रही थी।
   सामने सड़क **ही** दिख रही थी।
   सामने सड़क दिख **ही** रही थी।

   'ही' यहाँ एक ऐसा शब्द है जो इन तीनों वाक्यों में प्रयुक्त होकर अर्थ को विशेष बल देता है, जिसे 'निपात' कहते हैं। पाठ में **न, नहीं, तो, तक, सिर्फ, केवल** आदि निपातों का प्रयोग हुआ है। उन्हें पाठ में खोज कर अर्थ परिवर्तन की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनके स्वतंत्र प्रयोग का अभ्यास कीजिए।

2. पाठ में **किन्तु, नित्य, हे, अरे, पर, धीरे–धीरे, काफी, ऊपर, सामने** आदि शब्द आए हैं। जिन शब्दों के रूप में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता है वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। इनमें क्रिया–विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक आदि हैं। ऐसे शब्दों को चुनकर वाक्य में उनका प्रयोग कीजिए।

3. दे, ले, कह, सुन, मान, मना, हिलना, डुलना आदि क्रिया पद पाठ में आए हैं, इन पदों का वाक्यों में स्वतंत्र प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. एक पेड़ की जड़ के समान अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर दृढ़ रहने वाले और हवा में झूमते पेड़ की तरह समन्वयवादी रहने वाले बहुत से लोग आपके समाज में रहते हैं। उनसे, उनके जीवन अनुभव पर बातचीत कर कहानी की तरह लिखने का प्रयास कीजिए।

2. इस निबंध के लेखक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं, स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ये जेल गए और विभिन्न प्रकार की यातनाएँ भी सहीं। आपके परिवेश में भी ऐसे लोग रहते होंगे। अपने आस–पास के वृद्ध–जन और शिक्षकों से संपर्क कर इनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और राष्ट्र के प्रति उनके कार्य–व्यवहार पर कक्षा में विचार गोष्ठी का आयोजन कीजिए।

पाठ – 6.3

साध

सुभद्रा कुमारी चौहान

जीवन परिचय

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान की दो कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए पर उनकी प्रसिद्धि झाँसी की रानी कविता के कारण है। ये राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं। वर्षों तक सुभद्रा कुमारी की 'झांसी वाली रानी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक कविताएँ युवाओं के हृदय में देशप्रेम के भाव को जागृत करती रही हैं। उनकी चर्चित कृतियों में 'बिखरे मोती','उन्मादिनी', 'सीधे सादे चित्र', 'मुकुल', 'त्रिधारा' और 'मिला तेज से तेज' प्रमुख हैं।

साध : सुभद्राकुमारी चौहान

मृदुल कल्पना के चल पँखों पर हम तुम दोनों आसीन।
भूल जगत के कोलाहल को रच लें अपनी सृष्टि नवीन।।
वितत विजन के शांत प्रांत में कल्लोलिनी नदी के तीर।
बनी हुई हो वहीं कहीं पर हम दोनों की पर्ण–कुटीर।।
कुछ रूखा–सूखा खाकर ही, पीतें हों सरिता का जल।
पर न कुटिल आक्षेप जगत के करने आवें हमें विकल।।
सरल काव्य–सा सुंदर जीवन हम सानंद बिताते हों।
तरु–दल की शीतल छाया में चल समीर–सा गाते हों।।
सरिता के नीरव प्रवाह–सा बढ़ता हो अपना जीवन।
हो उसकी प्रत्येक लहर में अपना एक निरालापन।।

रचे रुचिर रचनाएँ जग में अमर प्राण भरने वाली।

दिशि–दिशि को अपनी लाली से अनुरंजित करने वाली।।

तुम कविता के प्राण बनो मैं उन प्राणों की आकुल तान।

निर्जन वन को मुखरित कर दे प्रिय! अपना सम्मोहन गान।।

शब्दार्थ :–

मृदुल – कोमल, **चल** – चंचल; **वितत** – विस्तृत, फैला हुआ; **विजन** – निर्जन, जनहीन; **कोलाहल** – शोरगुल; **सृष्टि** – संसार, जगत; **प्रांत** – भूभाग; **कल्लोलिनी** – कल–कल की आवाज करने वाली; **पर्ण–कुटीर** – पत्तों से निर्मित कुटिया; **कुटिल जगत आक्षेप** – संसार के छल कपट पूर्ण या विद्वेषपूर्ण आरोप/दोषारोपण; **तरुदल** – वृक्षों का समूह; **निराला** – अनुपम, विलक्षण; **रुचिर** – रुचिकर, सुंदर; **दिशि–दिशि** – दिशा–दिशा में।

पाठ से

1. कविता में किस प्रकार की सृष्टि रचने की मृदुल कल्पना की गई है।
2. कवयित्री को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने की चाहत है और क्यों?
3. कविता की पंक्ति ''सरिता के नीरव प्रवाह–सा बढ़ता हो अपना जीवन'' का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. रुचिर रचनाओं से कवयित्री का क्या आशय है?
5. 'जीवन में निरालापन' कहकर कवयित्री ने क्या संकेत किया है?
6. कविता के शीर्षक 'साध' से जीवन की जिन अभिलाषाओं का बोध होता है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
7. ''तुम कविता के प्राण बनो, मैं उन प्राणों की आकुल तान।
   निर्जन वन को मुखरित कर दे प्रिय! अपना सम्मोहन गान।।''
   उपर्युक्त काव्य पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

3XXNGD

1. हम अपने जीवन को कैसा बनाना चाहते हैं और आस–पास के लोगों तथा प्रकृति से हमें कैसे सहयोग मिलता है? आपस में चर्चा कर लिखिए।

2. जीवन के प्रति अपने मन में उठने वाली लहर या कल्पनाओं के बारे में विचार करते हुए उन्हें लिखिए।

3. आपके आस–पास ऐसे लोग होंगे जो अभावों में रहते हुए भी दूसरों का सहयोग करने को सदैव तत्पर होते हैं, ऐसे लोगों के बारे में साथियों से चर्चा कर उनके भावों को लिखें।

4. आपको किन–किन कवियों की कविताएँ अच्छी लगती हैं ? आपस में चर्चा कर उन कवियों की विशेषताओं को लिखिए। यह भी बताइए कि वे कविताएँ आपको क्यों अच्छी लगती हैं?

भाषा के बारे में

1. विशेषण– संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं तथा जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। प्रस्तुत कविता में विशेषण और विशेष्य पदों का सघन प्रयोग कवयित्री द्वारा किया गया है, जैसे मृदुल कल्पना, नवीन सृष्टि, पर्ण कुटीर, सरल काव्य आदि। पाठ से अन्य विशेषण और विशेष्य को ढूँढ़ कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. कुछ विशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं जैसे – ऊँची कूद, तेज चाल, धीमीगति आदि। क्रिया की विशेषता बताने वाले इन विशेषणों को क्रिया विशेषण कहते हैं। किसी अखबार या पत्रिका को पढ़िए और क्रिया विशेषणों को खोज कर लिखिए।

3. कविता में दिए गए विशेष्य पदों में नए विशेषण या क्रियाविशेषण को जोडकर नए पदों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे–मृदुल–कल्पना, निर्मल–छाया, सुरीली–तान, निष्काम–जीवन। कविता में प्रयुक्त कुछ अन्य विशेष्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण या क्रियाविशेषण लगाकर नए पदों का निर्माण कीजिए। (आक्षेप, कुटीर, काव्य, प्रवाह, रचनाएँ, वन, तान, प्रांत, विजन, नदी।)

4. विशेषण के कई भेद (प्रकार) होते हैं। शब्द अपने 'विशेष्य' के गुणों की विशेषता का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे – अच्छा आदमी, लंबा लड़का, पीला फूल, खट्टा दही। अपने शिक्षक की सहायता से विशेषण के अन्य भेदों की पहचान कीजिए।

5. साध कविता में कई विशेषण शब्द हैं। उन शब्दों को पहचानिए तथा विशेषण के भेदों के अनुरूप वर्गीकृत कीजिए।

6. कविता में, **प्राण भरना** अर्थात जीवंत करना, मुहावरे का प्रयोग हुआ है। प्राण शब्द से सम्बन्धित कुछ अन्य मुहावरे इस प्रकार हैं – **प्राण सूखना** = अत्यंत भयग्रस्त होना, **प्राण पखेरू उड़ना** = मृत होना, **प्राणों की आहुति देना** = बलिदान करना। 'प्राण' शब्द से अन्य मुहावरे खोजकर उनका अर्थ लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. कुछ कविताएँ प्रकृति के कोमल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। कोमल भावों को प्रस्तुत करने वाली कविताओं को पुस्तकालय से ढूँढ़ कर साथियों के साथ वाचन कीजिए और शब्द, अर्थ, भाव, तुक आदि पर चर्चा कीजिए।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान की अन्य कविताओं जैसे 'कदंब का पेड़' 'मेरा नया बचपन', मेरा जीवन', 'खिलौनेवाला' को खोजकर पढ़िए और उनके भाव लिखिए।